Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ नाग पंचमी व्रत कथा ॥

॥ नागदेवताभ्यो नमः ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ किसान और नागिन की लोककथा ॥

यह उत्तर भारत में प्रचलित लोककथा का मौलिक, संक्षिप्त रूपांतरण है। इसे किसी एक पुराण का अक्षरशः पाठ न मानें।

बहुत समय पहले एक किसान अपने परिवार के साथ गाँव में रहता था। खेती ही उनकी आजीविका थी। एक दिन वह खेत में हल चला रहा था। मिट्टी में छिपे नागिन के बच्चों को वह देख नहीं पाया और हल की नोक से उन्हें चोट पहुँच गई। कुछ ही देर में उनकी मृत्यु हो गई।

जब नागिन लौटी और उसने अपने बच्चों को मृत पाया, तो वह गहरे शोक और क्रोध से भर उठी। लोककथा के अनुसार वह किसान के घर पहुँची और परिवार के सदस्यों को डस लिया। किसान की एक पुत्री उस समय घर पर नहीं थी, इसलिए वह बच गई।

बाद में नागिन उस कन्या के पास भी पहुँची। कन्या ने भय के बीच भी हाथ जोड़कर क्षमा माँगी। उसने बताया कि उसके पिता ने जानबूझकर किसी जीव को हानि नहीं पहुँचाई थी। अपने घर की पूजा के लिए रखे नैवेद्य के सामने उसने नागदेवता से दया की प्रार्थना की।

कन्या की करुणा और विनम्रता से नागिन का क्रोध शांत हुआ। उसने पूछा कि कन्या क्या चाहती है। कन्या ने अपने परिवार के लिए जीवनदान माँगा। कथा में कहा जाता है कि नागिन ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और परिवार फिर से जीवित हो गया।

॥ कथा का संदेश और पाठ ॥

अहिंसा और सावधानी

किसान ने अनजाने में हानि पहुँचाई थी। कथा खेत, मिट्टी और जीवों के प्रति सजगता सिखाती है। कन्या का उत्तर प्रतिशोध नहीं, करुणा और क्षमा था। इसी भाव से नाग पंचमी पर नागदेवता का स्मरण किया जाता है।

पूजा में कथा कैसे पढ़ें

नागदेवता के चित्र या मिट्टी की प्रतिमा के सामने दीप जलाकर कथा पढ़ें या सुनें। अंत में परिवार, खेतों और सभी जीवों की रक्षा के लिए प्रार्थना करें। अलग क्षेत्रों में कथा के पात्र, प्रसाद और अंत के शब्द बदल सकते हैं।

आस्तीक मुनि का दूसरा प्रसंग

नाग पंचमी से जुड़ा एक अलग प्राचीन आख्यान राजा जनमेजय के सर्पसत्र और आस्तीक मुनि से संबंधित है। उसमें आस्तीक के हस्तक्षेप से नागों का संहार रुकता है। यह कथा जीवों के प्रति दया का एक और स्मरण कराती है।

लोककथा में दूध का उल्लेख आता है, पर वास्तविक साँपों को दूध पिलाने, छूने या पकड़ने का प्रयास न करें। प्रतीकात्मक नैवेद्य नागदेवता की प्रतिमा या चित्र के सामने रखें।

॥ नागदेवताभ्यो नमः ॥